जन्म - 1555 ई० **केशवदास** मृत्यु - 1617 ई०

रचनाएँ! - काव्यशास्त्र से संबद्ध → रसिक प्रिया,
नखशिख → कविप्रिया, छन्दमाला → रामचन्द्रिका (महाकाव्य)
वीरदेव सिंह चरित, रतनबावनी, जहाँगीर जस चन्द्रिका,
विज्ञान गीता।

जन्म - 1613 ई० **भूषण** मृत्यु - 1715 ई०

उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले टिकवापुर ग्राम में
कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में।
रचनाएँ। - शिवराज भूषण, शिवा-बावनी, छत्रसाल दशक।

जन्म - ~~1613~~ ई० 1689 **घनानंद** मृत्यु - ~~1715~~ ई० 1739

बुलन्दशहर, और हिस्सार में हुआ था, जाति
~~टिकवापुर ग्राम कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में।~~
जाति भटनागर कायस्थ।
* भूषण की उपाधि इन्हें चित्रकूट के राजा रुद्रदेव सोलंकी ने दी।
* इन्होंने शिवाजी एवं छत्रसाल दोनों को लोकनायक माना।
* घनानंद मुहम्मद शाह रंगीले के आश्रय में रहते थे।

Scanned with Cam

रचनाएँ :- सुजानसागर, बिरहलीला, कोकसार, रसकेलि, वल्ली कृपानन्द, वियोगवेलि, इश्कलता, यमुनापथा, प्रीतिपावस, प्रेम पत्रिका, प्रेम सरोवर, ब्रज-विलास, जाति-विलास, देव-चरित्र, रस-विलास, प्रेम-चन्द्रिका, सुजान-विनोद, राग-रत्नाकर, नीतिशतक, नखशिख।

जन्मसंवत - 1730 देवदत्त मृत्यु :- 1824

इनका जन्म इटावानगर दैसाली टोला बल्लालपुर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था।
आश्रयदाता :- आजमशाह, राजा उद्योत सिंह, सुजान मणि स्थायी रूप से नहीं रहे।
रचनाएँ :- 72 ग्रन्थों की रचना की, आज कई अनुपलब्ध हैं।
उपलब्ध :- भाव-विलास, अष्टयाम, भवानी-विलास, प्रेम तरंग, कुशल विलास, जाति-विलास, देव चरित्र, रस विलास, प्रेमचन्द्रिका, सुजानविनोद, रागरत्नाकर नीतिशतक, नखशिख।

जन्म - 1617 ई० मतिराम

इनका जन्म कानपुर जिला के अन्तर्गत तिकवाँपुर में सन् 1617 ई० के आस-पास हुआ। ये कान्यकुब्ज कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे।
इनके पिता का नाम - पं० रत्नाकर त्रिपाठी
चिंतामणि और भूषण इनके भाई बताए जाते हैं।
रचनाएँ :- मतिराम सतसई, ललित ललाम, रसराज, छन्दसार, साहित्य सागर, फूल मंजरी, कुवयलानंद

Scanned with Cam

जन्म – 1595 बिहारीलाल मृत्यु 1663

इनका जन्म ग्वालियर बसुधा-गोविन्दपुर में हुआ था।
"जनम ग्वालियर जानिये, खण्ड बुन्देले बाल।
तरुनाई आई सुखद, मथुरा बसि ससुराल॥"

जयपुर के राजा - मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में रहा करते थे। एक दोहा महाराज की सेवा में पेश किया – नहिं पराग ------ हवाल॥
रचना → बिहारी सतसई - 713 दोहे।

चिंतामणि की रचनाएँ :- रस-विलास, छन्द विचार, पिंगल, शृंगार मंजरी, कविकुल कल्पतरु, कृष्ण चरित, काव्य विवेक, काव्य प्रकाश, कवित्त विचार रामायण। पाँच उपलब्ध।

भिखारीदास :- रस सारांश, काव्य निर्णय, शृंगार निर्णय, छन्दोर्णवपिंगल, शब्द नाम कोश, शतरंज शतिका।
ठाकुर :- ठाकुर ठसक, ठाकुर शतक
वृन्द :- बारहमासा (1668) भाव पंचाशिका (1686) नयन पच्चीसी, शृंगार शिक्षा, यमक सतसई।

आलम :- माधवानल, कामकन्दला, स्याम सनेही, सुदामा चरित, मुक्तक संग्रह – आलम केलि।

पद्माकर :- यह रीतिकाल के अन्तिम चरण के प्रसिद्ध कवि हैं। जयपुर नरेश ने इन्हें 'कवि-राज शिरोमणि' की उपाधि प्रदान की थी; ये बाँदा के निवासी थे। 'हिम्मत बहादुर बिरुदावली', जगद्विनोद, पद्माभरण, 'गंगालहरी' आदि इनके प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं, पद्माकर शृंगार और वीर रस के कवि रहे हैं।

Scanned with Cam